JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति

डॉ0 शक्ति पाण्डेय

भूमण्डल के विशाल रंगमंच पर अनेक संस्कृतियों एवं सभ्यताओं का उद्भव हुआ और कालान्तर में वे काल कवलित होकर मात्र इतिहास के पृष्ठों की विषय वस्तु बनकर रह गई। परन्तु आर्य जाति से सम्पृक्त भारतीय संस्कृति का मण्डित गौरवशाली स्वरूप अमर संस्कृति और लोकमंगल विधायक पावन चरित्र मानव जाति के लिए आदर्श सन्मार्ग एवं प्रोज्जवल प्रदीप है। भारत के क्रान्त द्रष्टा महर्षियों ने संसार के 'उपसार' अलौकिक दृश्य को समझा ही नहीं अपितु उसका सूक्ष्म दर्शन भी किया है। हमारी इस संस्कृति की आधारस्तम्भ हैं– आर्यनारियाँ। हिन्दू–नारी ने ही अ पने प्राणों की ऊर्जा से हिन्दू संस्कृति के लोक पावन प्रवाह को अक्षुण्णय और शाश्वत बनाये रखा है। सच कहा जाय तो आर्य जाति के उज्ज्वलम अस्तित्व को स्थायित्त्व प्रदान करने में हिन्दू या भारतीय सती नारियों का अप्रतिम योगदान है। संस्कृति–पौध का अभिसिंञ्चन इन सतियों ने समय–समय पर अपने प्राणवान रसों के माध्यम से किया है। यही कारण है कि आज भी प्रातःकाल गंगा, गीता और गायत्री के साथ ही सीता और सावित्री जैसी आर्य नारियों के आदर्श चरित्र एवं नाम का स्मरण स्वतः हो जाता है। उनके प्रति हृदय सहसा श्रद्धा एवं आदरभाव से परिपूर्ण हो जाता है। गीता और गायत्री का सत्य प्रतीक तो सीता और सावित्री हैं। हमारी सनातन संस्कृति के लिए ये प्राण स्वरूप एवं मूलस्रोत हैं। इनके ही आदर्श चरित्र के कारण भारत विश्वरेण्य एवं जगद्वन्ध है।

वैदिक साहित्स्यानुशीलेन विज्ञायते, यद् वैदिककाले स्त्रीणां स्थानाम् अतीव गौरवास्पदम् आसीत्। स्त्री गृहिणी, गृहस्वामिनी, सहधर्मिणी इत्यादिभिर्विशेषणैः संबोहयते स्म। पत्नीम्नरूपेण सा गृहस्वामिनपदम् अलमकरोत्। श्वसुर–श्वश्रवादिषु तस्या अधिकारो मन्यते स्म। 'सामग्री श्वशुरे भव सामग्री श्वश्रवां भव। ननान्दरि सम्राज्ञी भव साम्राज्ञी अधि देवृषु (ऋग्0 10.85.46)/'जायेदस्तम्' जाया एवं अस्तं गृहमित्यर्थ इति ऋग्वेदे (3.53.4) प्रतिदाघते/एतदेव संस्कृतेऽपि समर्श्यते यद्र–

**'न गृहं गृहमित्याहु र्गृहिणी गृहमुच्यते।'**

आर्य जाति का समग्र इतिहास पूता नारियों के गौरव से उद्भासित है परन्तु यहाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण करालिगण्या सतियों का आदर्श चरित गान द्वारा वर्तमान समाज का ध्यान इन्हीं नारियों के प्रति आकर्षित करना चाहती हूँ।

**महासती सीता**– विदेहराज जनक की लाडली पुत्री चक्रवर्ती नरेश दशरथ की पुत्रवधु और मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम की अर्द्धांगिनी प्राणप्रिया सीता जब वनगमन की बात सुनती हैं तो अपने प्राण वल्लभ के साथ वन जाने को सहर्ष तैयार होकर मन में दृढ़ निश्चय कर लेती हैं। उसकी सुकुमारता जगतख्यात है किन्तु रामजी के साथ वन मार्ग जो अत्यन्त कण्टकाकीर्ण था में वह नंगेपाव चलती हुई असह्य कष्टों को सहज सहन कर पातिव्रता धर्म का पूर्ण निर्वाह किया। वन में रावण द्वारा अपहरण करने के बाद नाना प्रलोभनों के अनन्तर भी सीता की दृढ़ अवधारण **'सपनेहूँ आन पुरूष जग नाही'** दृढ़तर होती गयी और उसके अत्यन्त निर्भीकता के साथ रावण का प्रतिकार किया–

**''शाक्या लोभयितुं नाहमैश्वर्येण धनने वा।**
**अनन्या राघवेणाहं भास्करेण यथा प्रभा।।**
**उपधाय भुजं तस्य लोकनास्थस्य सत्कृतम कथं।**
**नामोपधास्यामि भुज ममयस्य कस्यचित्''।।**
**विदतः सर्व धर्मज्ञः शरणागत वत्सलः। तेन मैत्री भवतु ते यदि जीवितुमिच्छसि।**[1]

जब रावण इतने पर भी नहीं रूका तो सीता जी का शरीर अमर्ष से ज्वालापुंज की भाँति तप्त हो गया और अनेक कठोर वचन कहती हुई सीता की आँखों से क्रोध के स्फुलिंग निकलने लगे तब ऐसा लगने लगा मानो वह रावण को सद्यः भष्म कर देगी। यह है भारतीय सतीत्व का महामहिम गौरव।।

**सती सावित्री**–सावित्री और सत्यवान की पारस्परिक दृढ़प्रीति शास्त्रों में वर्णित है। जब नारदजी ने यह बताया कि सत्यवान् की आयु तो मात्र एक वर्ष की है तब सावित्री ने निष्ठा और आत्म विश्वासपूर्वक कहा–''जो कुछ होना था हो चुका हृदय तो बस एक ही बार अर्पित किया जाता है और जो हृदय निर्माल्प हो गया उसे लौटाया कैसे जा सकता है। सती तो बस एक ही बार अपना हृदय अपने प्राणधन के चरणों में चढ़ाती है।'' इसी भावना के साथ उसका जीवन क्रम व्यतीत होने लगा। नियत काल आने पर जब सत्यवान् लेने के लिए यमराज पधारे तब उन्हें देखकर सावित्री ने हाथ जोड़कर अति आर्तस्वर में कहा–''देवेश आप कौन हैं? आप तो कोई देव प्रतीत होते हैं। यम ने करूणा भरे शब्दों मे कहा–तुम पतिव्रता और तपस्विनी हो इसलिए मैं सत्यता

के साथ तुम्हें बताता हूँ कि मैं यम हूँ, सत्यवान की आयु क्षीण हो गई है अतएव मैं उसे बांधकर ले जाऊँगा। यम द्वारा सत्यवान का प्राण लेकर दक्षिण दिशा की ओर जाने पर स्वतः सावित्री ने भी उनका अनुगमन किया। यम ने मना किया किन्तु सावित्री दृढ़ता से बोली–

**यत्र में नीयते भर्ता स्वयं वा यम गच्छति।**

**मया च तत्र गन्तव्यमेष धर्मः सनातन।।**[2]

सावित्री की इस दृढ़ निष्ठा एवं पातिव्रत्य ने यम को द्रवीभूत कर दिया उसने एक–एक करके वर के रूप में सावित्री के अन्धे श्वसुर को आँखे, साम्राज्य, उनके पिता को सौपुत्र होने का वर देकर सावित्री को लौटाने का प्रयास बार–बार किया, किन्तु वह न लौटकर अन्तिम वर के रूप में सत्यवान से भी सौ पुत्र प्राप्त करने एवं उसे जीवित होने का वरदान प्राप्त कर लिया–

**"न कामये भर्तृ विना कृता सुखं, न कामये भर्तृ विना कृता दिवं।**

**न कामये भर्तृ विना कृता श्रियं, न भर्तृ हीना व्यवसामि जीवितुम्"।।**[3]

यमराज वचन हार चुके थे उन्होंने सत्यवान् के सूक्ष्म शरीर को पाशमुक्त करके सावित्री को लौटा दिया यह है मृत्यु पर विजय स्थापित करने वाली भारतीय नारी की अप्रतिम सतीत्त्व शक्ति।

**सतीअनसुइया**–शास्त्रों एवं पुराणों में सती अनसूया का पावन चरित सर्वत्र वर्णित है। पति सेवा परायण अनसूया पति को ही सर्वस्व देवता मानकर आजीवन पतिव्रत्य का अनुपालन किया। '**मार्कण्डेयपुराण**' के इन श्लोकों की अवधाराणा अनसूया के अन्तस् में विद्यमान थी–

"नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न श्राद्धं नाप्युपोषितम्। भर्तुः शुश्रुषयैवैता लोकानिष्ठाञ्न्ति हि।।

**पतिप्रसादादिह च प्रेत्य चैव दशस्विनी नारी सुखमवाप्नोति नार्या भर्ता हि दैवतम्।।**[4]

पतिव्रता नारियों में सती अनुसूया का बहुत ऊँचा स्थान है। अभित्रऋषि की साध्वीपत्नी के लोकोत्तर चरित्र की वर्णना सर्वत्र शास्त्रों में सुलभ है। सीताजी को भी पतिव्रता धर्म की शिक्षा देती हुई अनुसूया की ये पंक्तियाँ आज भी अमर होकर प्रत्येक हिन्दू ललनाओं की कण्ठहार बनी हुई हैं– **"उत्तम के अस मस यम मांही। सपनेहूँ आन पुरूष जग नाहीं।"** ब्रह्म, विष्णु, महेश इन त्रिवेदों को बाल स्वरूप में परिवर्तित कर देने वाला अनसूया का सतीत्त्व जगवन्दित एवं आदर्श नारीत्त्व का प्रतीक बना हुआ है।

**सती दमयन्ती**–राजा नल एवं दमयन्ती की प्रेम कथा काव्यों का आधार बनी हुई है। जुए में सब कुछ हारने के बाद वन–वन भटक रहे नल–दमयन्ती मात्र एक वस्त्र सेवी बने हुए थे। वे दोनों अत्यन्त भूखे थे वन में सोने जैसे पक्षियों को देखकर उन्हें पकड़ने के लिए अपना वस्त्र नल में

फेंका किन्तु वे उस वस्त्र को लेकर उड़ गये और नल उनका पीछा करने लगे। श्रान्त दमयन्ती को सोती हुई छोड़कर नल के दूर जाने पर कुछ काल पश्चात जब दमयन्ती की नींद टूटी तो व नल के लिए बेचैन हो गई। इसी बीच उसे काटने के लिए एक बड़ा अजगर दौड़ा लेता है। दमयन्ती भागने लगी तभी एक व्याध् आकस्मिक रूप से उस अजगर को बाणों से आहत कर दमयन्ती के प्राण बचा लेता है किन्तु वह उसके रूप लावण्य पर मुक्ध होकर उससे प्रणय की याचना कर बैठा। पति और राज्य से वंचित दमयन्ती उस दृष्ट भाव को समझकर क्रोध में भर जाती है और तीखे स्वरों में पुकार कर कहती है–

**"यद्यहं नैषधदन्यं मनसापि न चिन्यते। तथाय पततां क्षुद्रो गतासुमुग्जीवन"।।**[5]

अर्थात यदि मेरे मन में नल के अतिरिक्त किसी अन्य पुरूष का ध्यान न आता हो तो यह नीच व्याध् यहीं गिर पड़े। इतना कहते ही वह व्याध् अग्नि से दग्ध वृक्ष की भांति निर्जीव होकर धरती पर धराशायी हो गया यह दमयन्ती का स्तुल्य पतिव्रत्य था जो अनुकरणीय है।

**सती शण्डिली**– अत्यन्त प्राचीन काल में कौशिक नामक एक निष्ठुर क्रोधी ब्राहम्मण था। जिसकी पत्नी निष्ठावती व पतिव्रता थी वह सुशील पत्नी अपने वीभत्स रूप वाले पति को ही सर्वश्रेष्ठ व देवता मानती थी। एक बार रात में वह अपने पति को कन्धे पर बैठाकर कहीं ले जा रही थी रास्ते में पैर के धक्के लग जाने पर माडत्य ऋषि ने उसे शाप दे दिया कि वह पुरूष सूर्य उगते ही मर जायेगा। पतिव्रता शण्डिली ने कहा अच्छा यह बात है तो जब तक मैं नहीं कहूँगी सूर्य उदय ही नहीं होगा। ऐसा ही हुआ। पतिव्रता के वचन कभी असत्य नही हो सकते। सूर्य देव की गति रूक गई। सूर्य दस दिनों तक नहीं उदित हुए। इससे समग्र ब्रह्माण्ड में कोलाहल मच गया। जब सभी देवी देवता सती शिरोमणि अभि–पत्नी अनसूया को प्रसन्न किया। अनसूया शाण्डिली के पास जाकर सूर्योदय न होने के दुष्परिणाम को समझा बुझाकर सूर्योदय होने देने के लिए उसे सहमत कर लिया किन्तु अर्धरात्रि को सूर्य का उपस्थापन किया गया तो सूर्योदय होने लगा और इधर पतिव्रता शण्डिल्य का पति कौशिक प्राण रहित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। उस समय अनसूया ने जो वचन कहे वे चिर स्मरणीय है–

**यथा भर्तृसमं नान्यमपश्यं पुरूषं क्वचित्।**
**तेन सत्येन विप्रोऽयं व्याधिमुक्तः पुनर्दुवा।।**
**प्राप्नोतु जीवितं मार्या सहायः शरदां शतम्।**
**यथा भर्तृसमं नान्यमहं पश्चति दैवतम्।।**

**तेन सत्येन विप्रोऽयं पुनर्जीवत्वनामयः।**

**यथा ममोद्ययो नित्यं तथायं जीवतात् दिजः।।**

**कर्मणा मनसा वाचा भर्तुराधनं प्रति।।**[6]

इस प्रकार वह ब्राह्मण पुनर्जीवित हो युवा होकर स्वस्थपुरूष की भाँति उठकर बैठ गया। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में ऐसे अनेक दृष्टान्त हैं तो आदर्श नारी की महिमा के गुणगान हेतु पर्याप्त है।

रावण समान महायोद्धा को अपने तेज से प्रकम्पित कर देना, यमराज को जीतकर अपने पति को जीवित करा देना, त्रिदेव को अपने सतीत्त्व से बाल रूप प्रदान कर देना, अपने सत्य तेज से व्याध को भस्म कर देना, सूर्योदय को रोक देना जैसे लोकोत्तर कार्य भारतीय पतिव्रत धर्म परायण देवियों के लिए ही सम्भव था। आज नारी–शक्ति इसी प्रतिव्रत धर्म को भूलकर श्रीहत हो रही हैं और इसी में उन्नति मानी जाती है। यह अपनी संस्कृति की विमुखता का परिणाम है जो नारी समाज की सच्ची प्रगति के लिए बाधक है। भारतीय नारी के लिए हमारी आदर्श से संस्कृति मूलक सद्भावना अनुप्रेरक है इसकी संस्थापना हेतु लोगों को संकल्पित प्रयास के साथ तत्पर रहना चाहिए।

की–वर्ड :– भारत में नारी का महत्त्व,

1. भारतीय नारी कोष अमिताभ मिश्र साहित्य मण्डल प्रकाशन 2014, 58
2. पौराणिक ग्रंथो में नारी शक्ति की कहानियों सुधा मूर्ति, प्रभात प्रकाशन, 2020, 192
3. प्राचीन भारत में नारी, उर्मिला प्रकाश मिश्रा मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ, अकेडमी भोपाल, 2014, 98
4- hi, m.wikipedia.org
5. booksinhindi.com
6- epustakalay.com
7. पुराणों का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ0 मनीषा चतुर्वेदी बनारास हिन्दू विश्वविद्यालय 2003, 312